ISSN: 2349-4654
नाद-नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक वर्ष : 7, अंक-1, अप्रैल 2019

चित्रपट संगीत में इटावा घराने के कलाकारों का योगदान

अर्शी

शोधार्थी, संगीत विभाग, पंजाब यूनिवर्सिटी, चंडीगढ़

Paper recieved on : April 30, 2019, Return : May 09, 2019, Accepted : May 15, 2019

सार-संक्षेप

भारतीय चित्रपटों में 30 के दशक से गीत-संगीत का प्रयोग होने लगा, चाहे वह सुगम संगीत हो या लोक संगीत, उपशास्त्रीय संगीत हो या फिर शास्त्रीय संगीत यानि संगीत की प्रत्येक विधा से चित्रपटों का अलंकरण होने लगा और संगीत, चित्रपटों का अभिन्न अंग बन गया। चित्रपटों में संगीत ही ऐसा माध्यम है जिस पर सम्पूर्ण चित्रपट आधारित होता है। पुराने हिन्दी चित्रपटों में अधिकांशत: जो गीत-संगीत का प्रयोग होता था, वह शास्त्रीय संगीत प्रधान था। इसलिए भारतीय चित्रपट संगीत के क्षेत्र में शास्त्रीय संगीत के उच्चकोटि के विभिन्न घरानेदार गायकों, वादकों एंव नर्तकों ने अपने संगीत निर्देशन एवं कला प्रर्दशन से चित्रपट संगीत को शास्त्रीय संगीत के आधार पर एक नयी दिशा प्रदान की। इन्हीं घरानेदार कलाकारों में से इटावा घराने के संगीतकारों यथा उस्ताद विलायत खां, उस्ताद इमरत खां, उस्ताद हफीज़ खाँ (ख़ां मस्ताना), उस्ताद अज़ीज़ खां, उस्ताद शुजात खां, उस्ताद निशात खाँ आदि ने अपने गायन, वादन तथा संगीत निर्देशन से चित्रपट संगीत की परम्परा को और भी समृद्ध बनाया। इन संगीतज्ञों ने जहाँ एक ओर भारतीय एवं विदेशी चित्रपटों में अपने संगीत निर्देशन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की वहीं दूसरी ओर इन चित्रपटों द्वारा विश्व स्तर पर भारतीय शास्त्रीय संगीत का प्रचार प्रसार भी किया। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य विद्यार्थियों, शोधार्थियों एवं जन-साधारण को इटावा घराने के कलाकारों द्वारा चित्रपट संगीत के क्षेत्र में दिए गए योगदान से अवगत करवाना है। सामग्री संकलन हेतु माध्यमिक स्त्रोतों के अन्तर्गत विभिन्न पुस्तकों, पत्रिकाओं एवं इंटरनेट का प्रयोग किया गया है।

मुख्य शब्द : चित्रपट, संगीत, निर्देशन, उस्ताद, शास्त्रीय

शोध-पत्र

हिन्दी चित्रपटों के गीत-संगीत के इतिहास पर यदि दृष्टि डाली जाए तो ज्ञात होता है कि जिन चित्रपटों में शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत-संगीत का प्रयोग किया गया, उस गीत-संगीत ने खूब प्रशंसा प्राप्त की और इन सभी संगीतकारों का भी चित्रपट संगीत जगत् के अतिरिक्त जन-साधारण में विशेष नाम हुआ। विशेषकर सन् 1940 से 1962 तक के चित्रपटों का गीत-संगीत शास्त्रीय संगीत पर ही आधारित है। यूँ तो अनगिनत गीत हैं जो विभिन्न संगीतकारों ने शास्त्रीय संगीत में निबद्ध किए हैं। जो चिरंजीवी भी हैं और अमर भी। परन्तु कुछ प्रमुख गीत ऐसे भी हैं जो पूर्णत: शास्त्रीय हैं। जन-साधारण उन शास्त्रीय नियमों से, उन रागों से अनभिज्ञ हैं परन्तु उन गीतों को सुनकर आम जनता ये जान गई है कि अमुक गीत अमुक राग पर आधारित हैं। चित्रपट संगीत में संगीत निर्देशकों ने बहुत ही सुंदरता और दक्षता से जन-साधारण को शास्त्रीय संगीत का दिग्दर्शन करवाया। शास्त्रीय संगीत में शास्त्र सम्मत कुछ नियमों व बन्धनों का निर्वाह अवश्य होता है। अत: इन नियमों का पालन चित्रपटों में भी किया जाता था क्योंकि चित्रपट का प्रेरक भारतीय रंगमंच था।

सन् 1922-30 तक नाटकों का राष्ट्रीय स्तर पर बोलबाला था। भारत के विख्यात हारमोनियम वादक, शास्त्रीय संगीत के मर्मज्ञ गोविन्दराव टेंबे एक अच्छे नाटककार भी थे। इन्होंने नाट्य संगीत में ठुमरी, कज़री, कव्वाली आदि कई शैलियों का विशेष प्रयोग किया। इनके अतिरिक्त भास्कर बुवा बखले, हीराबाई बड़ौदेकर, पंडित विनायक राव पटवर्धन इत्यादि कई संगीतज्ञों ने नाटकों में संगीत-निर्देशन करके नाट्य संगीत तथा शास्त्रीय संगीत के सम्बन्ध को अधिकाधिक सुदृढ़ बनाया।[1]

भारतीय नाट्य परम्परा के आधार पर जब भारत में सवाक् चित्रपटों का पर्दापण हुआ तो उन में भी अधिकांशत: जो गीत-संगीत का प्रयोग हुआ वो शास्त्रीय संगीत प्रधान ही था। जिस कारण चित्रपट संगीत में विभिन्न घरानेदार शास्त्रीय कलाकारों ने भी संगीत निर्देशन एवं कला प्रर्दशन द्वारा अहम भूमिका निभाई। जिस में सर्वप्रथम किराना घराने की सुप्रसिद्ध गायिका विदुषी हीराबाई बड़ौदेकर ने सन् 1937 में गोविन्दराव टेंबे के संगीत निर्देशन में 'प्रतिभा' नामक चित्रपट में पार्श्व गायिका के रूप में तीन गीत गाए जिनको उस समय में विशेष प्रशंसा प्राप्त हुई। इनके पश्चात् संगीत जगत् के अन्य घरानेदार गायकों यथा उस्ताद बड़े गुलाम अली खां, पंडित डी. वी. प्लुस्कर, पंडित भीमसेन जोशी, उस्ताद सलामत अली खां, बेगम प्रवीन सुलताना, पंडित राजन-साजन मिश्रा, पंडित छन्नू लाल मिश्रा, उस्ताद राशिद खाँ आदि विशेष उल्लेख्य हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत के गायकों के अतिरिक्त संगीत के घरानेदार सुप्रसिद्ध वादकों तथा नर्तकों ने भी चित्रपट संगीत में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है जिनमें पंडित रवि शंकर (सितार),

उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ (शहनाई), उस्ताद अब्दुल हलीम ज़ाफर खाँ (सितार), पंडित शिव कुमार शर्मा (संतूर), पंडित हरिप्रसाद चैरसिया (बांसुरी), पंडित सामता प्रसाद (तबला), उस्ताद ज़ाकिर हुसैन (तबला), सितारा देवी (नर्तकी), पंडित गोपी किशन (नर्तक), पंडित शम्भू महाराज (नर्तक), पंडित बिरजू महाराज (नर्तक) आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। विभिन्न घरानों के उपर्युक्त संगीतज्ञों के अतिरिक्त इटावा घराने के कलाकारों ने भी चित्रपट संगीत में अपने संगीत निर्देशन, गायन तथा वादन के साथ चित्रपट संगीत को और भी परिष्कृत किया।

इटावा घराने के अदिपुरुष राजपूत गायक 'सरोजन सिंह' को माना गया है जो 18वीं शताब्दी में इन्दौर और रतलाम के मध्य में किसी गाँव में रहते थे। इन्होंने अपनी संगीत की शिक्षा उस समय के प्रसिद्ध वीणा वादक 'निर्मल शाह' से प्राप्त की। उनके बेटे 'तुराब खां' जिनका नाम पहले बद्दू सिंह था ने धर्म परिवर्तन कर लिया था।[2] ये एक महान् संगीतज्ञ थे और उनकी बहन की शादी ग्वालियर घराने के प्रसिद्ध कलाकार हद्दू-हस्सू खाँ में से किसी एक से हुई थी। तुराब खाँ के पुत्र साहबदाद खां, जिनका नाम पहले साहिब सिंह था, ही इटावा घराने की अगली पीढ़ी के प्रतिनिधि थे।[3]

साहबदाद खाँ हद्दू खाँ के भतीजे थे, जिनके घर में रहकर उन्होंने ख़्याल सीखा तथा सितार बजाया।[4] तुराब खाँ के सुपुत्र साहबदाद खाँ के कारण ही उनके परिवार को प्रसिद्धी मिली जो कि सुरबहार के आविष्कारक थे। आप के दो पुत्रों में से करीमदाद की मृत्यु बाल्यकाल में ही हो गई थी। अत: आपके दूसरे पुत्र उस्ताद इमदाद खाँ ने ही आपके द्वारा विकसित वादन शैली को आगे बढ़ाया। उस्ताद इमदाद खाँ धीमी एवं द्रुत दोनों गतों का वादन करते थे। उन्हें प्रतिपादित करने में उनकी शैली इतनी अद्वितीय थी कि कुछ वर्गों द्वारा इस घराने को 'इमदादखानी बाज' भी कहा जाने लगा।[5]

उस्ताद इमदाद खाँ के सुपुत्रों में उस्ताद इनायत खाँ तथा उस्ताद वहीद खाँ ने क्रमश: सितार एवं सुरबहार की परम्परागत वादन शैली को विकसित करते हुए एक अभिनवगत शैली को प्रचारित किया। 20वीं शताब्दी के महान् सितार वादक उस्ताद विलायत खाँ जो कि उस्ताद इनायत खाँ के बड़े सुपुत्र थे, ने सितार वादन में मुख्यत: ख़्याल शैली का प्रतिपादन करते हुए अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति अर्जित की। वहीं आपके छोटे भाई उस्ताद इमरत खाँ ने सुरबहार की वादन शैली में अद्वितीय योगदान देते हुए उसका विश्व स्तर पर प्रचार-प्रसार किया। वर्तमान समय में इस घराने की सातवीं एवं आठवीं पीढ़ी के कलाकार इस घराने की परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं। इन कलाकारों ने जहाँ एक ओर शास्त्रीय संगीत में स्वयं को सुप्रसिद्ध संगीतज्ञ के रूप में स्थापित किया वहीं दूसरी ओर इनमें से कुछ कलाकारों ने चित्रपट संगीत को भी अपनी कला द्वारा सुदृढ़ता प्रदान की, जिनका वर्णन कालक्रमानुसार इस प्रकार है।

उस्ताद हाफीज़ खां—उस्ताद हाफीज़ खां, उस्ताद वहीद खाँ के बड़े सुपुत्र थे। यद्यपि आपने अपनी युवा अवस्था में ही सितार वादन में विशेष महारत हासिल कर ली थी परन्तु चित्रपट संगीत में 'के. एल. सहगल' के गायन से आप बहुत प्रभावित हुए एवं चित्रपट संगीत में पार्श्व गायक बनने का मन बना लिया। चित्रपट संगीत की दीवानगी इस कदर थी कि आप 17 वर्ष की अल्पायु में बम्बई चले आए। अब्बा के डर से आपने संगीत निर्देशक 'रफ़ीक गज़नबी' के सुझाव पर अपना नाम हाफीज़ खाँ से 'एच. के. मस्ताना' रख लिया, जो बाद में 'खां मस्ताना' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। बम्बई में 3-4 वर्ष के संघर्ष के बाद आपको सर्वप्रथम सिने-निर्माता 'चंद्रराव कदम' के चित्रपट 'बहादुर किसान' में संगीत निर्देशक 'मीर साहिब' द्वारा एक गीत गाने का अवसर प्राप्त हुआ। यह गीत था 'बालम गए परदेस री, सजनी काहे नीर बहाए', जिसको बहुत प्रशंसा मिली। 'मीर साहिब' ने इनके व्यक्तित्व में घुले मस्तमौलापन की मुनासिबत से इनका फिल्मी नामकरण किया—'खां मस्ताना'।[6] सन् 1939 में प्रसिद्ध अभिनेता, निर्देशक एवं निर्माता 'सोहराब मोदी' ने 'पुकार' नामक एक चित्रपट का निर्माण किया, जिसके एक गीत 'हे-हो धोए महोबे घाट' में खाँ मस्ताना ने सहगान के रूप में 'सियोराम-सियोराम' शब्दों को गाया, जिसने सोहराब मोदी को विशेष रूप से प्रभावित किया। इस चित्रपट की सफलता से प्रेरित होकर सोहराब मोदी ने सन् 1941 में अपनी आगामी पेशकश के रूप में 'सिकन्दर' नामक चित्रपट को रिलीज़ किया। इसमें आपने 'मीर साहिब' के संगीत निर्देशन में एक गीत 'ज़िन्दगी है प्यार से, प्यार में बिताए जा।' के कोरस में गायन किया। इसके पश्चात् आप सोहराब मोदी के चहेते बन गए।

सोहराब साहिब ने इनके साथ अपनी कम्पनी 'मिनर्वा मूवीटोन' के अन्तर्गत तीन वर्ष का अनुबन्ध कर लिया। इन्होंने उनकी कई फिल्मों के लिए गीत गाए और कई गीत प्रसिद्ध भी हुए। मसलन-फिल्म 'जेलर' के लिए इनका गाया गीत 'काया रेत-घरौंदा है' और फिल्म 'पनिहारी' का गीत 'पनघट पर एक छबीली, पानी भरन को आई।' हर गीत के साथ 'खां मस्ताना' की शोहरत बढ़ती गई।[7] सन् 1945 में बनी फिल्म 'धन्ना भगत' में संगीत निर्देशक 'खेम चन्द प्रकाश' के निर्देशन में आपने राग खमाज पर आधारित 'बन्सी वारे श्याम प्यारे' गीत को बाखूबी गाया जिसे विशेष सराहना मिली।

आपने सन् 1948 में 'शहीद' नामक चित्रपट में 'मोहम्मद रफ़ी' के साथ एक गीत 'वतन की राह में, वतन के नौजवाँ शहीद हो' को गाया, जो कि बहुत प्रचलित हुआ। खाँ मस्ताना ने भारतीय चित्रपटों में पार्श्व गायन के साथ-साथ संगीत निर्देशन भी किया जिनमें अकेला (1941), सर्कस क्वीन (1941), मुकाबला (1942), राजा रानी (1942) राहगीर (1943), राजा (1943), तलाश (1943), बदमाश (1944), शरारत (1944), टैक्सी ड्राइवर (1944), नीलम (1945), वीर कुनाल (1945) आदि चित्रपट विशेष उल्लेखनीय हैं। इस प्रकार खाँ मस्ताना ने लगभग 100 फिल्मों में पार्श्व गायन के साथ-साथ कुछ में संगीत निर्देशन भी किया।

उस्ताद विलायत खां—उस्ताद विलायत खाँ जहाँ एक ओर शास्त्रीय संगीत के दिग्गज़ कलाकार थे, वहीं दूसरी ओर उन्होंने चित्रपट संगीत में भी विशेष रुचि दिखाते हुए अपनी कला से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। इन्होंने सर्वप्रथम चित्रपट संगीत निर्देशक 'मदन मोहन' के आग्रह पर

'मदहोश' नामक चित्रपट में पार्श्व संगीत के रूप में सितार वादन किया। जिसमें आप ने राग भैरवी, खमाज, दरबारी, मालकौंस, ललित, आसावरी आदि प्रस्तुत किए। इसके पश्चात सन् 1958 में आप ने विश्व प्रसिद्ध चित्रपट निर्देशक 'सत्याजीत रे' के निर्देशन में बने प्रसिद्ध बांगला चित्रपट 'जलसाघर' में संगीत निर्देशन किया। जिसमें उस्ताद वहीद खाँ (सुरबहार), बेग़म अख़्तर (गायन), उस्ताद सलामत अली खाँ (गायन), उस्ताद बिस्मिल्लाह खाँ (शहनाई), उस्ताद इमरत खाँ (सुरबहार) आदि संगीत जगत् की दिग्गज हस्तियों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। सन् 1969 में 'जेमस आईवरी' के निर्देशन में बने अंग्रेजी चलचित्र 'द गुरु' में संगीत निर्देशक की भूमिका निभाई जिसमें आपके निर्देशन में आप के मामा उस्ताद ज़िन्दा हसन खाँ तथा उस्ताद फैयाज़ अहमद खाँ ने गायन, उस्ताद शकूर खाँ ने सारंगी, पंडित सामता प्रसाद ने तबला एवम् उस्ताद इमरत खाँ ने सुरबहार द्वारा आप का साथ दिया। आपने इस चित्रपट में अपने भाई उस्ताद इमरत खाँ के साथ राग 'बिलावल' प्रस्तुत किया तथा आपके मामा तथा उस्ताद फैयाज़ खाँ ने राग मालकौंस का गायन किया। इसके अतिरिक्त आप ने पंडित सामता प्रसाद की तबला संगत के साथ राग 'यमनी' प्रस्तुत किया। सन् 1976 में 'एच. के. वर्मा' के निर्देशन में बनी फिल्म 'कादम्बरी' में संगीत निर्देशन का कार्य किया। इस चित्रपट के एक गीत 'अम्बर की इक पाक सुराही, सागर सा एक जाम' बहुत ही लोकप्रिय हुआ। इसी के साथ आप ने सन् 1996 में मीरा नायर द्वारा निर्देशित चित्रपट 'कामसूत्र' के पार्श्व संगीत में भी सितार वादन किया। आज भी आपके द्वारा चित्रपटों में दिए गए संगीत को विलक्षण एवम् विशेष स्थान प्राप्त है।

उस्ताद अज़ीज खां—आप खाँ मस्ताना के छोटे भाई थे। जहाँ एक ओर आप ने शास्त्रीय संगीत के शिक्षण से अपने सुपुत्र उस्ताद शाहिद परवेज़ को विश्व स्तरीय सितार वादक बनाया, वहीं दूसरी ओर हिन्दी चित्रपटों में संगीत निर्देशन कर 'अज़ीज हिन्दी' के नाम से सफलता प्राप्त की। आप ने 'इंतजार के बाद', 'परिवर्तन' (1949), 'पुतली' (1950), 'एक्टर' (1952), 'धूप-छाओं' (1954), 'डंका' (1954), 'चलता पुर्जा (1958) आदि प्रसिद्ध चित्रपटों में संगीत निर्देशन किया। इसके अतिरिक्त आपने 'ख़य्याम साहिब' के साथ शर्मा जी तथा वर्मा जी के नाम से भी संगीत निर्देशन की भूमिका निभाई, जिसमें 'हीर-रांझा' नामक चित्रपट के संगीत को विशेष सफलता प्राप्त हुई। इसी के साथ 'पर्दा' 'प्यार की बातें', 'बीवी' में भी आप ने ख़य्याम साहिब के साथ संगीत दिया।

उस्ताद शुजात खां—उस्ताद शुजात खां, उस्ताद विलायत खाँ के बड़े सुपुत्र हैं। आपने सन् 2010 में 'प्रवेश भारद्वाज' के निर्देशन में बने चित्रपट 'मिस्टर सिंग मिसिज़ मेहता' में संगीत निर्देशन किया। आपने इस चित्रपट के पार्श्व संगीत में सितार वादन के साथ-साथ एक गीत 'ए खुदा' का गायन भी किया। आपके निर्देशन में उदित नारायण, रूप कुमार राठौड़, के. के., रिचा शर्मा तथा श्रेया घौषाल ने इस चित्रपट के गीतों का गायन किया।

उस्ताद निशात खां—आप उस्ताद इमरत खाँ के बड़े सुपुत्र हैं। आपने सन् 2011 में प्रसिद्ध चित्रपट निर्देशक 'सुधीर मिश्रा' के द्वारा निर्देशित चित्रपट 'ये साली जिंदगी' में 'अभिषेक रे' के साथ संगीत निर्देशन किया। इस चित्रपट में आपके संगीत निर्देशन में पार्श्व गायक सुखविंदर सिंह, कुनाल गांजेवाला, जावेद अली, सुनिधि चौहान, शिल्पा राव तथा अभिषेक रे ने इस चित्रपट के गीतों को आवाज़ दी। 'जावेद अली' द्वारा गाया गया गीत 'कैसे कहें अलविदा' विशेष रूप से प्रचलित हुआ।

इन कलाकारों द्वारा हिन्दी चित्रपटों में दिए गए संगीत निर्देशन का विवरण निम्नलिखित सूची अनुसार है—

क्र.सं.	कलाकार	चित्रपट	वर्ष	गीत संख्या
1.	उस्ताद हाफीज़ खाँ (ख़ां मस्ताना)	वसीयत	1940	6
		मेरे साजन	1941	7
		सर्कस क्वीन	1941	10
		अकेला	1941	11
		शेख़ चिल्ली	1942	10
		राजा रानी	1942	14
		मुकाबला	1942	9
		तलाश	1943	8
		राजा	1943	8
		राहगीर	1943	9
		बदलती दुनिया	1943	11
		टैक्सी ड्राइवर	1944	6
		शरारत	1944	9
		बदमाश	1944	9
		वीर कुनाल	1945	4
		नीलम	1945	9
		भेदी दुश्मन	1946	8
		एयर मेल	1946	7
		जिन्दा दिल	1947	7
		एकस्ट्रा गर्ल	1947	5
		भंवर	1947	8
		भूल न जाना	1948	10
		आज का फरहाद	1948	9
		ज़माने की हवा	1952	12
		गुनहगार	1953	8
		लकीरें	1954	9
		वतन	1954	6
2.	उस्ताद विलायत ख़ां	जलसाघर	1958	2
		द गुरु	1969	2
		कादम्बरी	1976	3

3.	उस्ताद अज़ीज़ ख़ां (अज़ीज़ हिन्दी)	पंडित जी फलाईंग प्रिंस	1946 1946	8 7
		उठो जागो	1947	9
		इंतज़ार के बार	1947	8
		हीर रांझा	1948	11
		शोहरत	1949	12
		रुमाल	1949	10
		परिवर्तन	1949	8
		पुतली	1950	11
		बीवी	1950	13
		धूप-छाओ	1954	9
		डंका	1954	11
		चलता पुर्जा	1958	10
4.	उस्ताद शुजात ख़ां	मिस्टर सिंग मिसिज़ मेहता	2010	10
5.	उस्ताद निशात ख़ां	ये साली जिंदगी	2011	8

उपर्युक्त विवरण से यह स्पष्ट होता हैं कि जहाँ एक ओर इटावा घराने के इन महान् कलाकारों ने शास्त्रीय संगीत से भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलवाई वहीं दूसरी ओर चित्रपटों में शास्त्रीय संगीत पर आधारित संगीत निर्देशन कर जन-साधारण में भी शास्त्रीय संगीत का प्रचार-प्रसार किया।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. गर्ग, उमा, संगीत का सौन्दर्य बोध (फिल्म संगीत के सन्दर्भ में), संजय प्रकाशन, दिल्ली, संस्करण 2000, पृ. 166
2. http://geocities. com/vilayatkhani-gharana/gharana. html Accessed on 15th April, 2019, 15:00
3. Ibid
4. Hamilton, James Sadler, Sitar Music in Calcutta–An Ethnomusicological Study, Motilal Banarsidass Publishers, Edition 1994, Delhi, p.165
5. Miner, Allyn, Sitar and Sarod in 18th and 19th Centuries, Motilal Banarsidass Publishers, Edition 1997, Delhi, p.152.
6. काज़मी, स्वामी वाहिद, संगीत, लक्ष्मी नारायण गर्ग, (सम्पादक), क्या आपको एक नाम 'ख़ां मस्ताना' याद है? पृ. 54
7. वही